17 जुलाई 2020, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2018-20

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

परद्रव्य कोई जबरन् तो बिगाड़ता नहीं है, अपने भाव बिगड़ें, तब वह भी बाह्य निमित्त है। तथा इसके निमित्त बिना भी भाव बिगड़ते हैं, इसलिये नियमरूप से निमित्त भी नहीं है। इसप्रकार परद्रव्य का तो दोष देखना मिथ्याभाव है, रागादि भाव ही बुरे हैं...

- मोक्षमार्गप्रकाशक, पृष्ठ 244

वर्ष : 43, अंक : 8
जुलाई (द्वितीय), 2020 (वीर नि.संवत्-2546)

संस्थापक सम्पादक : **अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल**
सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा**
सह-सम्पादक : **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**

आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

अभूतपूर्व आयोजन व अद्भुत सफलता के साथ -

ऑनलाइन जिनदेशना अन्तर्राष्ट्रीय अष्टाह्निका महोत्सव संपन्न

● देश के विभिन्न जिनमंदिरों से अभिषेक-प्रक्षाल के पश्चात् नन्दीश्वर विधान, ● आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचन, ● प्रतिदिन 6 घंटे वरिष्ठ व प्रतिभाशाली युवा विद्वानों के प्रवचन, गोष्ठी व उद्बोधन, ● प्रतिदिन बाल-युवा कक्षा, भक्ति व सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन ● प्रतिदिन सिद्धक्षेत्र, तीर्थक्षेत्र व शिक्षा संकुल की वीडियो यात्राओं का लाभ ● महोत्सव में कुल 120 विद्वानों का लाभ ● 9 दिनों तक प्रतिदिन 11 घंटे लाइव टेलिकास्ट ● 9 दिनों में कुल 12 देशों के 1,45,431 डिवाइस पर लगभग 3 लाख लोगों ने यूट्यूब पर लाभ लिया ● ज़ूम एप पर प्रतिदिन 250 डिवाइस पर लाभ लिया गया।

आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी के 300वें जन्मजयंती वर्ष के अवसर पर अष्टाह्निका पर्व में श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट मुम्बई एवं श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट मुम्बई के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 28 जून से 5 जुलाई तक ऑनलाइन जिनदेशना अन्तर्राष्ट्रीय अष्टाह्निका महोत्सव एवं श्री नन्दीश्वर द्वीप मण्डल विधान आयोजित किया गया।

इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात: गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों का आयोजन हुआ। इसके अतिरिक्त अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, ब्र. रवीन्द्रजी 'आत्मन' अमायन, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, दादा विमलचंदजी झांझरी उज्जैन, पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर, ब्र. हेमन्तभाई गांधी सोनगढ, ब्र. हेमचंदजी 'हेम' देवलाली, पण्डित शैलेषभाई शाह तलोद, पण्डित संजयजी शास्त्री जेवर, श्री पवनजी जैन अलीगढ, डॉ. सुदीपजी जैन दिल्ली, ब्र. श्रेणिकजी जबलपुर, श्री बसंतभाई दोशी मुम्बई, पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित सुनीलजी शास्त्री राजकोट, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित नीलेशभाई

(शेष पृष्ठ 6 पर...)

21वाँ JAANA शिविर संपन्न

जैन अध्यात्म अकेडमी ऑफ नॉर्थ अमेरिका (JAANA) द्वारा प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी दिनांक 3 से 5 जुलाई 2020 तक अमेरिका और कनाडा के विविध प्रांतों में फैले हुए आत्मार्थी मुमुक्षुओं के लिये 21वाँ वार्षिक शिविर ऑनलाइन लगाया गया।

शिविर में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर, पण्डित विपिनजी शास्त्री मुम्बई एवं पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर द्वारा प्रतिदिन प्रवचनों का लाभ मिला। प्रात: पूजन विधान एवं दोपहर में बालकों द्वारा विशेष प्रस्तुति के अतिरिक्त एक दिन विद्वानों द्वारा शंका-समाधान का कार्यक्रम रखा गया।

पण्डित टोडरमलजी की 300वीं जन्मजयंती को लक्ष्य में रखते हुए लगभग पूरा शिविर पं. टोडरमलजी एवं मोक्षमार्गप्रकाशक पर केन्द्रित रहा।

सम्पूर्ण शिविर JAANA के डायरेक्टर श्री अतुलभाई-चारु खारा, डॉ. संजीव गोधा, श्री पौरांग-निकेता पारेख, श्रीमती रोशनी सेठी और श्री अनंत-ऋचा पाटनी के निर्देशन में हुआ। श्री क्षितिज-शीतल शाह का विशेष सहयोग रहा। शिविर में लगभग 750 से अधिक लोगों ने लाभ लिया।

मंगल समाचार *देखना ना भूलें*

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के
ग्रंथाधिराज समयसार (निर्जराधिकार) पर प्रवचनों का प्रसारण
अब **अरिहन्त चैनल** पर
15 जुलाई, 2020 से प्रतिदिन
प्रात: 6:10 से 6:40 तक

अरिहन्त चैनल उपलब्ध है

Tata Sky - 1067
Airtel - 687
Dishtv - 1107
GTPL - 568
Dish Free to air - 79
Hethway - 840

इसका पुन: प्रसारण ptst के यूट्यूब चैनल पर भी दोपहर 2:30 बजे से 3:00 बजे तक किया जायेगा।
यूट्यूब पर ही 3 से 4 बजे तक प्रवचनसार का प्रवचन पहले की भांति चलता रहेगा।

सम्पादकीय –

आचार्यकल्प पण्डितप्रवर टोडरमलजी

– डॉ. संजीवकुमार गोधा

आचार्यकल्प पण्डितप्रवर टोडरमलजी का नाम दिगम्बर जैन समाज के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों से लिखा जाने योग्य है। विक्रम की अठारहवीं शताब्दी में उन्होंने अपने ज्ञान और प्रतिभा से अखण्ड भारत को प्रभावित किया। उनकी अद्वितीय प्रतिभा बेजोड़ थी।

वे आगम के गूढतत्त्वों के स्वयंबुद्ध ज्ञाता थे। जिनागम के सूक्ष्म विषयों को उन्होंने स्वयं अपनी तीक्ष्ण प्रज्ञा से निकालकर जगत के समक्ष प्रस्तुत किया। लब्धिसार व क्षपणासार की संदृष्टियाँ प्रारम्भ करते हुए वे स्वयं लिखते हैं –

''शास्त्र विषै लिख्या नाहीं और बतावने वाला मिल्या नाहीं।''

प्राकृत, संस्कृत और हिन्दी के अतिरिक्त उन्हें कन्नड भाषा का भी ज्ञान था। कन्नड जैसी क्लिष्ट भाषा और लिपि का ज्ञान एवं अभ्यास भी उन्होंने स्वयं किया। मूलग्रंथों को वे कन्नड लिपि में पढ लिख सकते थे।

पण्डितजी का कार्यक्षेत्र आध्यात्मिक तत्त्वज्ञान का प्रचार व प्रसार करना था, जिसे वे लेखन-प्रवचन आदि के माध्यम से करते थे। उनका सम्पर्क तत्कालीन आध्यात्मिक समाज से प्रत्यक्ष व परोक्षरूप से दूर-दूर तक था। जयपुर के जौहरी बाजार स्थित श्री दिगम्बर जैन तेरापंथी बड़ा मंदिर में उनके द्वारा प्रतिदिन प्रवचन एवं आध्यात्मिक गोष्ठियों का संचालन इतना प्रभावी होता था कि 800-1000 साधर्मी उनके सान्निध्य में गहन तत्त्वाभ्यास में संलग्न रहते थे।

वर्तमान समय में समाज में विद्वान बनाने हेतु जिसप्रकार विद्यालयों का संचालन हो रहा है, वैसा कोई विद्यालय पण्डित टोडरमलजी के समय में न तो था, ना ही पण्डितजी ने संचालित किया, तथापि उनके सान्निध्य एवं समागम मात्र से अनेक साधर्मी उच्चकोटि के विद्वान बने, जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन माँ सरस्वती की सेवा एवं साहित्य साधना के लिये समर्पित कर दिया। उन विद्वानों में पण्डित जयचंदजी छाबड़ा, ब्र.रायमलजी, पण्डित दौलतरामजी कासलीवाल, पण्डित सेवारामजी, पण्डित देवीलालजी गोधा, दीवान रतनचंदजी एवं स्वयं उन्हीं के सुपुत्र पण्डित गुमानीरामजी आदि प्रमुख हैं।

जो व्यक्ति क्षेत्र से अत्यंत दूर होने के कारण उनके समक्ष प्रत्यक्ष उपस्थित नहीं हो सकते थे, वे पण्डित टोडरमलजी से पत्र व्यवहार द्वारा अपनी शंकाओं का समाधान प्राप्त करते थे। मुलतान (पाकिस्तान) के साधर्मियों की शंकाओं के समाधान हेतु लिखी गई रहस्यपूर्ण चिट्ठी इसका प्रबल साक्ष्य है।

पण्डित टोडरमलजी अपने समय के सबसे प्रसिद्ध विद्वान ही नहीं थे; अपितु प्रसिद्ध सुधारक भी थे। वे किसी भी बात को परम्परा से चली आने के कारण ही नहीं मान लेते थे; किन्तु उसको कसौटी पर परखने के पश्चात् ही स्वीकार करते थे। वे आचार्य समन्तभद्र के समान परीक्षा प्रधानी थे। उन्हें लकीर के फकीर होना कभी पसंद नहीं था। तर्क और श्रद्धा का अपूर्व संगम उनमें दिखाई देता था। आचार्य समन्तभद्र के बाद पण्डित टोडरमलजी ही केवल ऐसे वाङ्मय प्रणेता हुए, जिनकी वाणी में श्रद्धा के साथ परीक्षकता भी थी।

टोडरमलजी आत्मानुभवी तो थे ही अर्थात् उन्होंने आत्मा को तो पढा ही था, सैंकड़ों जैन शास्त्रों के साथ-साथ उन्होंने अन्यमतों को भी सूक्ष्मता से पढा था। वे सिर्फ शास्त्रों के पाठक ही नहीं थे, वे समाज को भी पढना जानते थे। उनकी तीक्ष्ण प्रज्ञा एवं सूक्ष्म दृष्टि से तत्कालीन समाज एवं उसके धार्मिक क्रियाकलाप भी ओझल नहीं थे। उन्होंने विद्वानों के हृदय को भी पढा तथा उनके अंतर की सूक्ष्म भूलों को निकालने का सफल प्रयत्न किया। पण्डितजी निरंतर आत्मसाधना में निमग्न रहने वाले विशुद्ध आत्मवादी विचारक थे, उन्होंने आध्यात्मिकता से विपरीत सभी विचारधाराओं/कुरीतियों/लोकमूढताओं पर तीक्ष्ण प्रहारकर उनकी जड़ें हिला दी।

चाहे भक्ति करने वाले लोग हों या पूजा-प्रभावनादि कार्यों में संलग्न, लोभादि के अभिप्राय से धर्म साधने वाले हों या मुक्त हस्त से दान देने वाले, तप करने वाले हों या व्रतादि को धारण करने वाले, यहाँ तक कि शास्त्राभ्यास करने वालों की विकृतियों को निकालने में भी पण्डितजी की लेखनी ने कोई कसर नहीं छोड़ी।

अन्यमत, जैनमत, जैनसमाज, विद्वत्वर्ग आदि सभी की विकृतियों को जड़मूल से उखाड़ फेंकने के लिये कृतसंकल्पित इस महामानव को जीवन के मध्यवय में लगभग 47 वर्ष की अल्पायु में ही सांप्रदायिक विद्वेष का शिकार होकर जीवन से हाथ धोना पड़ा; किन्तु उनके द्वारा मोक्षमार्गप्रकाशक में दिया गया दिशा-निर्देश युगों-युगों तक देश व समाज के लिये पथप्रदर्शक बना रहेगा। ●

वीरशासन जयंती मनाई

दुबई : यहाँ अरिहंत मित्र मंडल के तत्त्वावधान में भगवान महावीर के प्रथम बार दिव्यध्वनि खिरने के उपलक्ष्य में वीर शासन जयंती का आयोजन किया गया।

प्रात: विशेष पूजन का आयोजन हुआ, सायंकाल अरिहंत ज्ञानशाला के बच्चों ने भगवान महावीर के जीवन का परिचय देते हुए विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये, जिसका संचालन अनुश्री शाह ने किया। इस अवसर पर देश-विदेश में प्रसिद्ध गायक गौरव-दीपशिखा जैन जयपुर ने भगवान महावीर की भक्ति करते हुए भजन प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में प्रथम बार ऑनलाइन इन्द्रसभा का आयोजन हुआ, जिसमें 25 इन्द्र-इन्द्राणियों ने आध्यात्मिक चर्चा प्रस्तुत की। इन्द्रसभा का निर्देशन पण्डित संजयजी शास्त्री जेवर ने किया।

कार्यक्रम का संयोजन डॉ. नीतेशजी शाह ने किया। समस्त कार्यक्रम ज़ूम एप एवं यूट्यूब पर लाइव दिखाया गया, जिससे हजारों साधर्मियों ने लाभ लिया। अन्त में अरिहंत मित्र मंडल के वरिष्ठ सदस्य श्री पद्मकुमारजी पाटनी ने कार्यक्रम के मीडिया प्रभारी स्वीटू शाह, जयेश जैन और दीपकराज जैन छिन्दवाड़ा तथा अतिथियों का स्वागत व आभार व्यक्त किया।

ऑनलाइन जिनदेशना अन्तर्राष्ट्रीय अष्टाह्निका महोत्सव में –

विभिन्न संगोष्ठियाँ सानन्द संपन्न

ऑनलाइन जिनदेशना अन्तर्राष्ट्रीय अष्टाह्निका महोत्सव के अन्तर्गत विभिन्न संगोष्ठियों का भी आयोजन हुआ।

● दिनांक 29 जून को '**श्री मोक्षमार्गप्रकाशक**' विषय पर आयोजित प्रथम गोष्ठी के अध्यक्ष पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली एवं मुख्य अतिथि श्री विजयभाई दोशी पुणे थे।

इस अवसर पर पण्डित गौरवजी शास्त्री इन्दौर ने **आगम की परम्परा में मोक्षमार्गप्रकाशक की सार्थकता,** पण्डित प्रसन्नजी शास्त्री सांगली ने **मोक्षमार्गप्रकाशक और उसका मंगलाचरण,** पण्डित विवेकजी जैन मलाड ने **मोक्षमार्गप्रकाशक के प्रेरणादायी वाक्य,** पण्डित जितेन्द्रजी शास्त्री मुम्बई ने **जैनशासन के उन्नयन में पण्डित टोडरमलजी की भूमिका,** पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर ने **मोक्षमार्गप्रकाशक के मर्मस्थल,** पण्डित ऋषभजी शास्त्री उस्मानपुर ने **मोक्षमार्गप्रकाशक की अपूर्वता,** पण्डित अमोलजी शास्त्री हिंगोली ने **पण्डित टोडरमलजी आचार्यकल्प क्यों?,** पण्डित विक्रांतजी पाटनी झालरापाटन ने **पण्डित टोडरमलजी का मूलस्वर,** पण्डित अंकुरजी शास्त्री भोपाल ने **आत्मार्थियों को मोक्षमार्गप्रकाशक का स्वाध्याय क्यों आवश्यक है?,** डॉ. शुद्धात्मप्रकाशजी जैन मुम्बई ने **मोक्षमार्गप्रकाशक में आगम के उद्धरण** विषय पर अपने विचार व्यक्त किये।

गोष्ठी का मंगलाचरण पण्डित संजयजी शास्त्री जयपुर, संयोजन पण्डित अशोकजी शास्त्री राघौगढ एवं संचालन पण्डित अभयजी शास्त्री खैरागढ ने किया।

● दिनांक 2 जुलाई को '**श्रावकाचार**' विषय पर आयोजित द्वितीय गोष्ठी के अध्यक्ष पण्डित सचिनजी जैन मंगलायतन एवं मुख्य अतिथि श्री संजयजी दीवान सूरत थे।

इस अवसर पर पण्डित विक्रांतजी शास्त्री सोलापुर ने **श्रावक : स्वरूप और समीक्षा,** पण्डित संदीपजी शास्त्री दिल्ली ने **श्रावक की भूमिका,** पण्डित जयराजनजी शास्त्री चेन्नई ने **पाक्षिक व नैष्ठिक श्रावक स्वरूप,** डॉ. नीतेशजी शास्त्री दुबई ने **श्रावक की भूमिका में पुण्य का स्थान,** पण्डित विवेकजी शास्त्री विश्वासनगर ने **श्रावक का न्यूनतम बाह्य आचरण,** पण्डित शुभम शास्त्री ज्ञानोदय ने **अविरत श्रावक और आत्मानुभूति,** डॉ. महावीरजी शास्त्री उदयपुर ने **श्रावक के अष्ट मूलगुण,** पण्डित सोनूजी शास्त्री सोनगढ ने **श्रावक के व्रतों का पालन,** डॉ. प्रवीणजी शास्त्री बांसवाड़ा ने **मोही मुनि से निर्मोही श्रावक श्रेष्ठ,** डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य' जयपुर ने **देश–काल आदि परिस्थितियों के आधार पर श्रावकाचार** विषय पर अपने मनोभाव व्यक्त किये।

गोष्ठी का मंगलाचरण श्री ज्ञाता सिंघई सिवनी, संयोजन पण्डित अमितजी शास्त्री अरिहंत मड़ावरा एवं संचालन पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर ने किया।

● दिनांक 4 जुलाई को '**छहढाला**' विषय पर आयोजित तृतीय गोष्ठी के अध्यक्ष डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर एवं मुख्य अतिथि श्री प्रशांतजी मामा पुणे थे।

इस अवसर पर पण्डित राहुलजी शास्त्री मुम्बई ने **वैराग्य उपावन मांई... का भाव,** पण्डित निलयजी शास्त्री आगरा ने **निर्जरा के विभिन्न प्रकार,** पण्डित उमापतिजी शास्त्री चेन्नई ने **स्वरूपाचरण चारित्र – सम्यक्त्वाचरण चारित्र,** पण्डित नेमिनाथजी शास्त्री कुम्भोज बाहुबली ने **छहढाला के चारों अनुयोग,** डॉ. श्रेयांसजी शास्त्री जबलपुर ने **दु:ख मोह का अथवा प्रतिकूलता का – पहली ढाल के आधार पर समीक्षा,** पण्डित अभिषेकजी शास्त्री पालडी अहमदाबाद ने **मोक्षमार्गप्रकाशक और छहढाला में वर्णित गृहीत व अगृहीत मिथ्यात्व की तुलना,** पण्डित अनुभवजी जैन करेली ने **छहढाला में अध्यात्म,** पण्डित अभिषेकजी शास्त्री ने **निश्चय और व्यवहार रत्नत्रय,** डॉ. महेशजी शास्त्री भोपाल ने **आकुलता और निराकुलता का प्रायोगिक वर्णन,** मंगलार्थी अनुभवजी जैन पुणे ने **सम्यक्त्व के अंग एवं दोष का उपचरित और यथार्थ निरूपण** विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किये।

गोष्ठी का मंगलाचरण पण्डित रतनचंदजी शास्त्री भोपाल, संयोजन पण्डित विकासजी शास्त्री बानपुर एवं संचालन पण्डित आलोकजी शास्त्री कारंजा ने किया।

● दिनांक 6 जुलाई को '**वीरशासन जयंती**' विषय पर आयोजित चतुर्थ गोष्ठी के अध्यक्ष डॉ. वीरसागरजी दिल्ली एवं मुख्य अतिथि श्री दिलीपभाई शाह मुम्बई थे।

इस अवसर पर पण्डित अरहंतप्रकाशजी झांझरी उज्जैन ने **वीरशासन का अर्थ व प्रसंग,** पण्डित सचिनजी शास्त्री चैतन्यधाम ने **वीरशासन जयंती और उसका महत्व,** पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा ने **वीरशासन और हमारे कर्तव्य,** पण्डित प्रमोदजी शास्त्री जयपुर ने **महावीरस्वामी द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत और लौकिक जीवन में उनकी उपयोगिता,** पण्डित अनुभवजी शास्त्री कानपुर ने **वीरशासन के सिद्धांतों की वर्तमान में प्रासंगिकता,** डॉ. अनेकान्तजी दिल्ली ने **वीरशासन से विश्व शांति कैसे?,** डॉ. विवेकजी छिन्दवाड़ा ने **वीरशासन जयंती की घटना का तात्विक पक्ष,** डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ ने **वीर का वारिस कौन?** एवं पण्डित स्वानुभवजी शास्त्री अहमदाबाद ने **दिव्यदेशना का स्वरूप** विषय पर अपने वक्तव्य प्रस्तुत किये।

गोष्ठी का मंगलाचरण पण्डित किशोरजी शास्त्री बैंगलोर, संयोजन पण्डित देवांगजी गाला मुम्बई एवं संचालन पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री मुम्बई ने किया।

डॉ. भारिल्ल की पद्य रचनाओं के ऑडियो तैयार

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा रचित 1. समाधि का सार, 2. दो तरह के भगवान, 3. सहजता, 4. यही है ध्यान यही है योग, 5. जिसमें मेरा अपनापन है, 6. न बदलकर भी बदलना, 7. कोई किसी का क्यों करे आदि पद्य रचनाओं के ऑडियो डॉ. गौरवजी सौगानी एवं दीपशिखाजी जैन के मधुर स्वर में तैयार हो चुके हैं। शीघ्र ही वीडियो भी तैयार होकर पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के यूट्यूब चैनल पर अपलोड किये जायेंगे।

अर्हं जैन ई-ग्रुप महाशिविर के प्रसंग पर प्राप्त कविताएं

–: अनुभव :–
शिविर के पहले शिविर के बाद

ये महा शिविर! ये महा शिविर!
लो लगा शिविर, ये ज्ञान शिविर!!
झम झम झम झम झम बरसाये,
जब तत्त्वज्ञान ये महाशिविर!!

भूतल से ताप मिटाने को,
जिनवाणी का गौरव आया,
मन का सन्ताप मिटाने को,
ये तत्त्वज्ञान निर्झर लाया।
सन्ताप मिटेगा मन का भी,
रे! आगम ज्ञान शिविर लाया,
अज्ञानी से ज्ञानी बनने का,
स्वर्णिम यह अवसर लाया।
झूमो! नाचो! भविजन प्राणी,
भावों का ये महाशिविर!!
ये महाशिविर.....

जब चर्चा प्रवचन कक्षा में,
सब बैठेंगे अपने घर में,
दादा–दादी, चाचा–चाची,
सब साथ पढेंगे फिर घर में,
बच्चों की तुतली बोली जब,
पूजन से राग मिलायेगी,
उत्साही वृद्धों के मन को,
भक्ति में नृत्य करायेगी।
होगी प्रभावना ओजस्वी,
तब सफल बनेगा ज्ञान शिविर
ये महाशिविर.....

गणतंत्र ओजस्वी
एक ही धुन...
एक ही राग
बस....
महा शिविर! महा शिविर!
महा शिविर! ई–शिविर!
देखा तत्त्वज्ञान के समंदर को
हर प्राणी के अंदर था...
13000 नहीं तीस हजारी थे
दादा–दादी, नाना–नानी,
सब पर भारी थे
क्या बालक
क्या प्रौढ
क्या जवान
सबसे ज्यादा खुश थे
बूढे नौजवान
हुई भावना सफल
मिला पुण्य का फल
कर्मों की बेड़ियाँ टूटीं
जो नहीं जुड़ा इससे
मानो उससे
किस्मत रूठी
देखा
मैंने उस ज्वार को
जो उमड़ रहा था
हर वर्ग के मन में
पल रहे थे सपने हजार
करने धर्म प्रचार
बाहर संकट था
समय बहुत विकट था
फिर भी
जीत गए
वो
सात दिन
कब बीत गए।

– गणतंत्र शास्त्री 'ओजस्वी'

बड़ो अचंभो सबहों लग रओ

गांव–गांव में चर्चा हो रई
कक्का सेस काकी हैं कह रई
मोबाइल में शिविर चला रये
घर बैठे जिनवाणी दे रये
कौनऊ चमत्कार सो हो रओ
बड़ो अचंभो सबहों लग रओ

पाठशाला जा नोनी (अच्छी) लग रई
लॉकडाउन की पीरा मिट गई
भुनसारे (सुबह) से दौड़ है लग रई
बड़ी गजब की पूजन हो रई
बीमारी को रोनो मिट गओ
बड़ो अचंभो सबहों लग रओ

देश विदेश के लोग हैं जुर गए
सब शास्त्री जी जम के लग रये
टोडरमल की बात है नोनी (अद्भुत)
डाक साहब (दादा) की नजरें पेनी
गुरुदेव को अमृत बह रओ
बड़ो अचंभो सबहों लग रओ

मन की गिल्ल (खुशी) कौन से कह दें
देख खुशी के आंसू बहवें
सबने मिल हुंकार भरी है
अबे तो जा शुरुआत नई है
एक नओ (नया) भविष दिखा रओ
बड़ो अचंभो सबहों लग रओ

दद्दा बऊ (दादी) सब संगे (साथ) बैठे
कर उलात (जल्दी) से काम समेंटे
घर–घर में जिन गंगा बह रई
बात गजब की सबहों पुसा (पसंद) रई
विराग सबई से जुहार (जय जिनेन्द्र) कह रओ
बड़ो अचंभो सबहों लग रओ

– विराग शास्त्री, जबलपुर

पं. टोडरमलजी के 300वें जन्मजयंती वर्ष के अवसर पर प्रस्तुत है – ज्ञानपहेली

मोक्षमार्गप्रकाशक – अध्याय 2 (संसार अवस्था का स्वरूप)

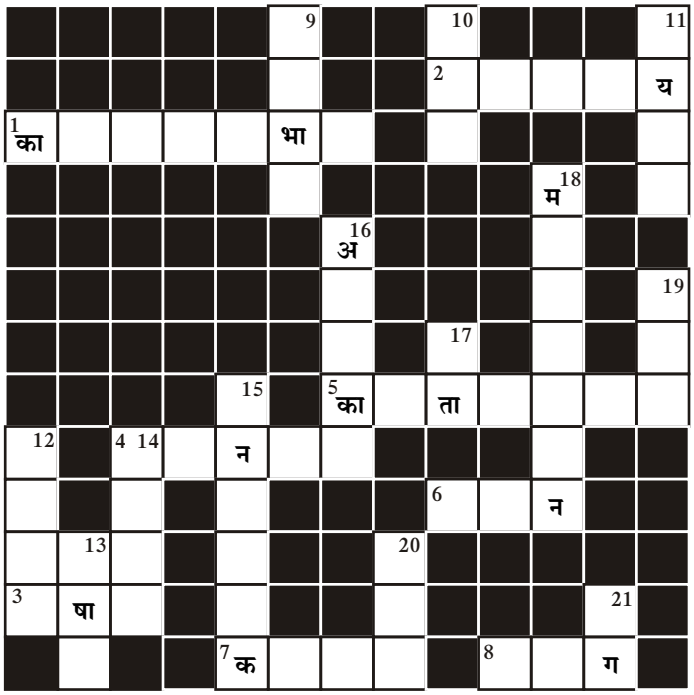

बाएं से दाएं –

1. द्रव्यकर्म और भावकर्म – इनसे जिस भाव से संसार परिभ्रमण होता है (7)
2. प्रवचनसार का एक अधिकार (5)
3. मिथ्यात्व क्रोधादि भावों का सामान्यत: नाम है (3)
4. जिसके सिर पर पड़ने से पुरुष पागल हो जाता है (5)
5. एकेन्द्रिय छोड़ अन्य पर्यायों की प्राप्ति .....वत् है (7)
6. एकेन्द्रिय पर्याय का एक भेद (3)
7. एक पंचेन्द्रिय तिर्यंच का नाम (4)
8. अप्रीति के होने पर जो होता है (3)

ऊपर से नीचे –

9. जिससे कर्मप्रकृतियों में शक्ति विशेष होती है (4)
10. जिससे दु:ख के कारण मिलते हैं (3)
11. पवनरूप शरीर का एक अंग (4)
12. अनुभाग शक्ति अभाव होने पर कर्मों का कर्मत्व अभाव होने को कहते हैं (4)
13. शोक के उदय से मानता है (3)
14. जिसके उदय से मिथ्यात्व और कषाय भाव होते हैं (4)
15. एकेन्द्रिय से असंज्ञीपर्यंत जीवों को जो श्रुतज्ञान है (6)
16. कर्म बंधने के जितने काल बाद वो उदय में आते हैं, उस काल को कहते हैं (5)
17. जिससे सुख के कारण मिले (2)
18. मोक्षमार्ग में प्रगट होने वाले ज्ञानों में से एक (7)
19. प्रतिसमय कर्म खिरते हैं, उसको कहते हैं (3)
20. त्रसपर्याय में परिभ्रमणकर जिस निगोद को प्राप्त होते हैं, उसे कहते हैं (3)
21. वेदनीय कर्मोदयजन्य एक अवस्था (2)

प्रस्तुति – आप्तअनुशील शास्त्री, दमोह

अपना नाम एवं पता सहित सही जवाब सादे कागज पर लिखकर भेजें, भेजने की अंतिम तिथि 20 अगस्त 2020 है। प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार के अतिरिक्त 5 सांत्वना पुरस्कार भी दिये जायेंगे।

भेजने का पता– जैनपथप्रदर्शक ज्ञानपहेली, ए–4, बापूनगर, जयपुर–15

वाट्सअप पर भेजने हेतु – 9660668506 (पीयूष कुमार जैन)

समयसार विद्यानिकेतन ग्वालियर में –

ऑनलाइन गोष्ठियाँ संपन्न

ग्वालियर (म.प्र.) : यहाँ श्री समयसार विद्यानिकेतन आत्मायतन द्वारा सत्र 2020–21 की प्रथम साप्ताहिक ऑनलाइन गोष्ठी दिनांक 7 जून को **आध्यात्मिक भजन संध्या** के रूप में आयोजित की गई।

कार्यक्रम के अध्यक्ष विद्यानिकेतन की प्राचार्या श्रीमती अंजलि जैन, मुख्य अतिथि श्रीमती मंजू दीदी जनकगंज तथा विशिष्ट अतिथि ब्र. संगीता दीदी व संस्था निर्देशक पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी शास्त्री थे।

कार्यक्रम का मंगलाचरण कु. मुक्ति जैन ने एवं संचालन व आभार प्रदर्शन पण्डित प्रदीपजी शास्त्री व पण्डित प्रवीणजी शास्त्री ने किया।

दिनांक 21 जून को द्वितीय साप्ताहिक ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन '**पाँच पाप**' विषय पर किया गया, जिसकी अध्यक्षता पण्डित धनेन्द्रजी शास्त्री ने की। मुख्य अतिथि के रूप में विद्यानिकेतन के संरक्षक श्री वीरेन्द्रजी लखनऊ तथा विशिष्ट अतिथि व निर्णायक के रूप में विद्यानिकेतन से पण्डित विनीतजी शास्त्री नागपुर और संस्था निर्देशक पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी शास्त्री उपस्थित थे। गोष्ठी में प्रथम स्थान आर्यन जैन भोपाल, द्वितीय स्थान उत्कर्ष जैन भिण्ड एवं तृतीय स्थान आरुष जैन खनियांधाना ने प्राप्त किया।

मंगलाचरण समयार्थी तनिष जैन भिण्ड ने एवं संचालन व आभार प्रदर्शन पण्डित प्रदीपजी शास्त्री व पण्डित प्रवीणजी शास्त्री ने किया।

दिनांक 28 जून को तृतीय साप्ताहिक ऑनलाइन गोष्ठी '**आचार्य और उनके ग्रंथ**' विषय पर हुई, जिसका मंगलाचरण ओजस जैन ललितपुर ने किया। गोष्ठी की अध्यक्षता पण्डित राजेशजी शास्त्री विदिशा ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री योगेन्द्रजी भारिल्ल राघौगढ, विशिष्ट अतिथि के रूप में पण्डित अशोकजी शास्त्री राघौगढ व श्री उदयकिशोरजी एडवोकेट ग्वालियर एवं निर्णायक के रूप में पण्डित पवनजी शास्त्री ग्वालियर, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी शास्त्री व प्राचार्या अंजलि जैन उपस्थित थे।

गोष्ठी में प्रथम स्थान समकित जैन गोहद, द्वितीय स्थान अचल जैन पोरसा एवं तृतीय स्थान श्रेयांस जैन मौ ने प्राप्त किया।

दिनांक 5 जुलाई को चतुर्थ साप्ताहिक ऑनलाइन गोष्ठी '**चार कषाय**' विषय पर हुई, जिसका मंगलाचरण आरुष जैन खनियांधाना ने किया। गोष्ठी के अध्यक्ष पण्डित सिद्धार्थजी दोशी, मुख्य अतिथि श्री संदीपजी जैन पुणे एवं विशिष्ट अतिथि श्रीमती अनुपमा जैन सुनेजा व श्री आशीष जैन विलासपुर थे।

दिनांक 12 जुलाई को पंचम साप्ताहिक ऑनलाइन गोष्ठी '**सप्त व्यसन**' विषय पर हुई, जिसका मंगलाचरण श्रेयांस जैन मौ ने किया।

गोष्ठी की अध्यक्षता पण्डित अजितकुमारजी शास्त्री अलवर ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री अगम जैन (आई.पी.एस.) जबलपुर, विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. अनेकान्तजी शास्त्री दिल्ली व पण्डित विक्रांतजी शास्त्री झालरापाटन एवं निर्णायक के रूप में पण्डित अनुभवजी जैन पुणे उपस्थित थे। गोष्ठी में प्रथम स्थान आदि जैन पाली, द्वितीय स्थान समकित जैन गोहद एवं तृतीय स्थान ऋषभ जैन अमायन व आदित्य जैन पोरसा ने प्राप्त किया।

(पृष्ठ 1 का शेष...)

शाह मुम्बई, पण्डित देवेन्द्रजी बिजौलिया, पण्डित चेतनभाई मेहता राजकोट, पण्डित अश्विनभाई शाह मुम्बई, पण्डित प्रकाशभाई शाह कोलकाता, पण्डित प्रद्युम्नकुमारजी जैन मुजफ्फरनगर, डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ, पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर, ब्र. सुनीलजी शिवपुरी, पण्डित सौरभजी शास्त्री इन्दौर, पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री मुम्बई, श्री किरीटभाई गोसलिया अमेरिका, पण्डित अतुलभाई कामदार हैदराबाद, ब्र. प्रीतेशजी कोठारी पंढरपुर आदि विद्वानों के प्रवचनों का लाभ मिला। प्रतिदिन हुए प्रवचनों के आधार पर प्रश्नमंच का भी आयोजन किया गया।

महोत्सव में बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' कोटा एवं डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी के वीडियो प्रवचन भी हुये। प्रतिदिन विभिन्न मंदिरों से जिनेन्द्र–अभिषेक का प्रसारण, बाल एवं किशोर वर्ग हेतु कक्षाएं, अनेक तीर्थों व शिक्षा संकुलों का परिचय और वीडियो यात्रा प्रसारण, अनेक ज्ञानवर्धक संगाष्ठियों का आयोजन, अनेक महानुभावों द्वारा जिनवाणी विराजमान करने का लाभ, अनेक महानुभावों द्वारा जिनेन्द्र–भक्ति, आध्यात्मिक कवि सम्मेलन, विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि भी आयोजित हुये।

विधान के समस्त कार्य पण्डित संजयजी जेवर द्वारा पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा, पण्डित ऋषभजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, पण्डित विवेकजी शास्त्री छिन्दवाड़ा एवं पण्डित अशोकजी जैन उज्जैन के सहयोग से हुए।

वीरशासन जयंती

दिनांक 6 जुलाई को वीरशासन जयन्ती का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर प्रात: पण्डित ऋषभकुमारजी, डॉ. विवेकजी और श्री सचिनजी के निर्देशन में वीरशासन जयन्ती की प्रासंगिक पूजन की गई। तत्पश्चात् पूज्य गुरूदेवश्री का प्रासंगिक सीडी व्याख्यान हुआ। व्याख्यान के बाद एनीमेशन द्वारा भगवान महावीर के गर्भ, जन्म और तप कल्याणक का प्रदर्शन किया गया। इन कल्याणक की भक्ति के समय साधर्मी भावविभोर हो गये और हर घर में साधर्मियों ने नृत्य के माध्यम से अपना आनन्द व्यक्त किया।

तत्पश्चात् डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल एवं पण्डित सुनीलजी शास्त्री राजकोट का प्रासंगिक व्याख्यान हुआ। दोपहर में बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' का वीरशासन जयन्ती पर आडियो प्रवचन हुआ और वीरशासन जयन्ती पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी के पश्चात् भगवान महावीर के ज्ञानकल्याणक का मनोहर प्रदर्शन किया गया और दिव्यध्वनि प्रसारण किया गया। ज्ञान कल्याणक की भक्तियों में हजारों साधर्मी झूम उठे। समस्त कार्यक्रम विराग शास्त्री के मार्गदर्शन और श्रीमति ममता जैन धर्मपत्नी श्री आई.एस. जैन के विशेष सहयोग से सम्पन्न हुआ।

रात्रि में डॉ. उत्तमचन्दजी जैन सिवनी का वीडियो व्याख्यान हुआ। इसके बाद समापन समारोह किया गया और विराग शास्त्री द्वारा गुरूदेवश्री के जीवन पर रचित आल्हा गीत प्रदर्शित किया गया।

इस कार्यक्रम में देश–विदेश की 28 सभी मुमुक्षु संस्थाओं की सहभागिता हुई। समय–समय पर देश विदेश के मुमुक्षु समाज के प्रतिनिधियों के उदबोधन प्राप्त हुये। मुमुक्षु समाज के इतिहास में पहली बार पूरा समाज एक मंच पर उपस्थित हुआ। प्रतिदिन तीनों समय के स्वाध्याय के पूर्व देश के विभिन्न मुमुक्षु साधर्मियों द्वारा उनके ही घरों में प्रतीक स्वरूप जिनवाणी विराजमान की गई। शाश्वतधाम कन्या निकेतन उदयपुर द्वारा गोष्ठी की अत्यंत प्रभावशाली प्रस्तुति की गई।

इस महोत्सव समिति के संरक्षक श्री बसंतभाई दोशी, अध्यक्ष श्री अनंतराय ए. सेठ, कार्याध्यक्ष डॉ. किरण शहा पुणे, महामंत्री श्री विजयजी बडजात्या इंदौर, मंत्री श्री वीनूभाई शाह, मुख्य संयोजक श्री नगेशजी जैन पिड़ावा और श्री अमितजी अरिहंत मंडावरा, समन्वयक श्री नीलेशजी जैन इंदौर ने विशेष सक्रिय योगदान दिया। यह महोत्सव कार्यक्रम के निर्देशक विराग शास्त्री जबलपुर की विशाल और व्यवस्थित परिकल्पना, नवीन योजनाओं के समावेश और मुख्य समन्वयक पण्डित ज्ञायक शास्त्री वसई मुम्बई और जैनेक्स संगठन की अथक मेहनत, समर्पण और अनुशासन के कारण ऐतिहासिक रूप से सफल हुआ।

20वाँ वीर देशना बाल युवा संस्कार ई शिक्षण शिविर संपन्न

कानपुर (उ.प्र.) : श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट मुम्बई एवं श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट मुम्बई के तत्त्वावधान में श्री दिगम्बर जैनाचार्य कुन्दकुन्द स्मारक ट्रस्ट के अन्तर्गत स्व.मीनादेवी धर्मपत्नी श्री केशवदेव जैन कानपुर की स्मृति में अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन कानपुर द्वारा आयोजित 20वाँ वीर देशना बाल युवा संस्कार ई शिक्षण शिविर दिनांक 14 से 21 जून तक सानन्द संपन्न हुआ।

दिनांक 14 जून को श्री बसंतभाई दोशी की अध्यक्षता एवं श्री मणिकांतजी कानपुर, श्री संजीवजी कानपुर, डॉ. अनुपमजी कानपुर व श्री प्रदीपजी कानपुर की उपस्थिति में भव्य उद्घाटन समारोह संपन्न हुआ। समारोह में पण्डित राजकुमारजी जबलपुर का उद्बोधन प्राप्त हुआ। सभा का संचालन पण्डित आशीषजी टीकमगढ द्वारा किया गया।

शिविर में प्रात: जिनेन्द्र–पूजन एवं कक्षाओं का आयोजन हुआ, दोपहर में पाठ्यक्रम की कक्षाएं लगी, सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति, सामूहिक कक्षा तथा रात्रि में रोचक सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए। सायंकालीन सामूहिक कक्षा में डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित अनुभवजी शास्त्री कानपुर, पण्डित सोनूजी शास्त्री अहमदाबाद, पण्डित विरागजी जबलपुर, पण्डित अभयजी शास्त्री खैरागढ, पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर, पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री मुम्बई ने जिनागम के गूढ विषयों को सरलतम भाषा में समझाया। कक्षा अध्यापक के रूप में पण्डित अनुभवजी, पण्डित सुदीपजी, पण्डित आशीषजी, डॉ. विवेकजी, पण्डित अभिषेकजी, पण्डित उर्विशजी, पण्डित साकेतजी, विदुषी श्रुति, विदुषी श्रेया का योगदान रहा।

शिविर में देश–विदेश के लगभग 3000 से अधिक साधर्मियों ने लाभ लिया। दिनांक 21 जून को अनेक साधर्मियों ने परीक्षा दी। सायंकालीन समापन समारोह व पुरस्कार वितरण समारोह की अध्यक्षता श्री अनंतराय शेठ मुम्बई ने की। साथ ही श्री रजतजी जैन कानपुर, श्री महिपालजी ज्ञायक बांसवाड़ा, श्री प्रदीपजी जैन कानपुर, श्री अशोकजी जबलपुर आदि का भी सान्निध्य प्राप्त हुआ। इस अवसर पर डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर का मांगलिक उद्बोधन मिला। कार्यक्रम का संचालन पण्डित अभयजी खैरागढ ने किया।

संपूर्ण कार्यक्रम का निर्देशन पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर द्वारा किया गया; सह–निर्देशक के रूप में आशीषजी टीकमगढ, अभयजी खैरागढ, ज्ञायकजी वसई, डॉ. विवेकजी इन्दौर का सहयोग प्राप्त हुआ। तकनीकी सहयोग जैनेक्ट टीम का प्राप्त हुआ।

श्री सिद्धचक्र विधान सानंद सम्पन्न

सर्वोदय अहिंसा ट्रस्ट, जयपुर द्वारा सर्वोदय अहिंसा यूट्यूब चैनल पर अष्टाह्निका महापर्व पर श्री सिद्धचक्र मंडल विधान का आयोजन हुआ।

प्रातः डॉ. प्रवीणजी शास्त्री बांसवाड़ा द्वारा मध्यलोक की कक्षा व आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के वीडियो प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ, जिसके बाद पण्डित अच्युतकांतजी शास्त्री जयपुर, पण्डित अमनजी शास्त्री दिल्ली एवं पण्डित समर्थजी शास्त्री ने उसका सार प्रस्तुत किया।

पूजन के पश्चात् तत्त्ववेत्ता **डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल** द्वारा जयमाला पर किये गये प्रवचनों का प्रसारण हुआ। साथ ही पण्डित विक्रांतजी शास्त्री सोलापुर द्वारा एनीमेशन के माध्यम से पंचमेरु-नंदीश्वर की कक्षा चली।

दोपहर में विभिन्न पाठों के पश्चात् ब्र. सुमतप्रकाशजी के '**अपूर्व अवसर**' विषय पर प्रवचन हुए। इसके बाद मुमुक्षु समाज के दिवंगत विद्वानों में बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' कोटा, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित ज्ञानचंदजी विदिशा, पण्डित लालचंद भाई, डॉ. उत्तमचन्दजी सिवनी एवं पण्डित वीरेन्द्रजी आगरा के वीडियो प्रवचनों का प्रसारण हुआ।

इस अवसर पर आयोजित दो व्याख्यानमालाओं के अन्तर्गत दोपहर में पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, पण्डित संजयजी जेवर, पण्डित अनुभवजी शास्त्री कानपुर, पण्डित सुनीलजी जैनापुरे राजकोट, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित अश्विनभाई मलाड, पण्डित सर्वज्ञजी भारिल्ल जयपुर एवं सायंकाल पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, डॉ. अरुणजी बंड, पण्डित राजकुमारजी उदयपुर, पण्डित देवेन्द्रजी बिजौलिया, पण्डित शैलेषभाई तलोद, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा, डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ, ब्र. श्रेणिकजी जबलपुर, पण्डित मनीषजी शास्त्री बरेली, पण्डित अभयजी शास्त्री खैरागढ़, पण्डित अंकुरजी शास्त्री भोपाल, पण्डित विनीतजी शास्त्री मुम्बई आदि के प्रवचनों का लाभ मिला।

विधान के समस्त कार्य पण्डित समकितजी शास्त्री खनियाँधाना एवं पण्डित अनेकांतजी शास्त्री रहली द्वारा हुये। साथ ही पण्डित सुनीलजी शास्त्री एवं सुश्री श्वेतल जैन राजकोट ने पूजन में मधुर स्वर प्रदान किये।

कार्यक्रम के प्रसारण का तकनीकी कार्य सीए. पीयूष जैन, पण्डित विनीतजी शास्त्री एवं श्री शाश्वत राउत औरंगाबाद द्वारा किया गया।

– संजय सेठी, अध्यक्ष-सर्वोदय अहिंसा

'जैनपर्व चर्चा' कृति का हुआ विमोचन

डॉ. प्रवीणजी शास्त्री बांसवाड़ा द्वारा लिखित नवीन कृति '**जैनपर्व चर्चा**' का श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में दिनांक 12 जुलाई को डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा विमोचन किया गया।

कृति की विशेषता यह है कि इसमें जैनधर्म में प्रचलित मुख्य 20 पर्वों का आगमानुकूल वर्णन है, साथ ही दो राष्ट्रीय तथा चार सामाजिक पर्वों का भी अध्यात्मीकरण करके परिचय दिया गया है।

पुस्तक का प्रकाशन समर्पण-उदयपुर द्वारा किया गया। उत्कृष्ट रचना हेतु लेखक को हार्दिक बधाई!

श्रुतपंचमी पर्व संपन्न

● **देवलाली-नासिक (महा.) :** यहाँ श्रुतपंचमी पर्व के अवसर पर पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट देवलाली एवं सर्वोदय अहिंसा ट्रस्ट जयपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 27 मई को '**धन्य श्रुतावतार**' विषय पर विद्वत्संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें श्री षट्खण्डागम-श्रुतपंचमी विधान का आयोजन हुआ।

सर्वप्रथम प्रात: विधान के पश्चात् गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचन, दोपहर में पण्डित संजयजी शास्त्री जेवर द्वारा श्रुतावतार कथा का आयोजन, डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर द्वारा प्रवचन, सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं रात्रि में ऑनलाइन ज्ञानवर्धिनी प्रश्न मंच का आयोजन हुआ।

सायंकाल आयोजित गोष्ठी के अध्यक्ष पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली थे। गोष्ठी में ब्र. विमलाबेन जयपुर ने षट्खण्डागम का मर्म, डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर ने धवलाजी में स्व-पर प्रकाशक विवेचन, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर ने क्या धवलाजी करणानुयोग का ग्रंथ है, डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ ने श्रुतपरम्परा का विकास, पण्डित सचिनजी शास्त्री मंगलायतन ने षट्खण्डागम की विशेषताएं, पण्डित अंकुरजी शास्त्री भोपाल ने धवला में उल्लिखित सत्य के दस भेद, पण्डित विकासजी छाबड़ा इन्दौर ने षट्खण्डागम की विषय-वस्तु और उपयोगिता एवं पण्डित संयमजी शास्त्री नागपुर ने प्रथम श्रुतस्कंध में छिपे हुए अध्यात्म रहस्य विषय पर अपने विचार व्यक्त किये।

गोष्ठी के संयोजक उर्विशजी शास्त्री देवलाली एवं संजयजी शास्त्री जयपुर तथा संचालक पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री मुम्बई। तकनीकी सहयोगी सुदीपजी शास्त्री मुम्बई थे।

● **दुबई :** यहाँ अरिहंत मित्र मंडल के तत्त्वावधान में श्रुतपंचमी पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

कार्यक्रम में प्रात: नित्य-नियम पूजन, सायंकाल जिनवाणी भक्ति का आयोजन हुआ। इस अवसर पर स्थानीय विद्वान डॉ. नीतेशजी शाह ने श्रुत परम्परा पर विशेष चर्चा करते हुए स्वाध्याय का जीवन में महत्व पर विचार व्यक्त किये। रात्रि में अरिहंत ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा विभिन्न रंगारंग प्रस्तुतियों का आयोजन हुआ। छोटे-छोटे बच्चों ने जिनवाणी सजाकर अपने-अपने फोटो जिनवाणी के साथ भेजी थी, जिसको ज़ूम एप के माध्यम से लाइव दिखाया गया।

इस कार्यक्रम में दुबई, शारजाह, आबुधाबी और फुजेरा के लगभग 70 जैन बच्चों ने भाग लिया। बच्चों ने अपनी प्रस्तुतियों में जिनवाणी के महत्व, उसकी विनय और स्वाध्याय पर बहुत सुन्दर प्रस्तुतियाँ दी।

कार्यक्रम का संचालन और संयोजन डॉ. नीतेशजी शाह और अनुश्री शाह ने किया।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com
ये सभी प्रवचन सामग्री अब vitragvani एप पर भी उपलब्ध है।

आदर्श दम्पत्ति जैनत्व संरक्षण आभासी (ई) शिविर संपन्न

श्री नेमिनाथ दिगम्बर जैन नया मन्दिर ट्रस्ट के अन्तर्गत संचालित श्री महावीर कुन्दकुन्द कहान नन्दीश्वर दिगम्बर जैन विद्यापीठ चेतनबाग खनियांधाना के तत्त्वावधान में ब्र. रवीन्द्रकुमारजी 'आत्मन्' अमायन व डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल जयपुर के मंगल आशीर्वाद, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना की मंगल प्रेरणा से पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर के मुख्य निर्देशन में श्रीमती रेखा-संजय दीवान परिवार सूरत के विशेष सहयोग से दिनांक 15 से 21 जून तक प्रथम बार आदर्श दम्पत्ति जैनत्व संरक्षण आभासी (ई) शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें देश-विदेश के लगभग 3500 से अधिक साधर्मियों ने लाभ लिया।

शिविर के प्रथम दिन तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल की अध्यक्षता में श्री बसंतभाई दोशी मुम्बई के मुख्य आतिथ्य व श्री अजितजी बड़ौदा व अनुपमा राकेशजी दुबई के विशिष्ट आतिथ्य में शिविर का उद्घाटन हुआ।

इस अवसर पर डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य' जयपुर, डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, ब्र. रानीदीदी खनियांधाना का विशेष लाभ प्राप्त हुआ। साथ ही पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित विकासजी छाबड़ा इन्दौर, पण्डित निलयजी शास्त्री आगरा, पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री आगरा, ब्र. राहुल भैया रानीपुर, पण्डित निखिलजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित तपिशजी शास्त्री उदयपुर, ब्र. बासंतीबेन देवलाली, ब्र. प्रज्ञा दीदी दिल्ली, डॉ. आरती दीदी छिन्दवाड़ा, ब्र. जीनलबेन देवलाली, ब्र. एकता दीदी सिंगोड़ी, ब्र. सहजता दीदी सिगोड़ी, ब्र. प्रियंका दीदी खनियांधाना, विदुषी प्रियदर्शना चेन्नई, डॉ. ममताजी उदयपुर द्वारा प्रतिदिन कक्षाएं संचालित हुईं।

संपूर्ण शिविर में प्रतिदिन प्रात:काल जिनेन्द्र पूजन, स्वाध्याय, विशेष कक्षाएं, आध्यात्मिक पाठ व विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित हुए। साथ ही 'हमारा हर घर कैसा हो : एक आदर्श परिवार चयन' नामक कार्यक्रम आकर्षण का केन्द्र रहा। कार्यक्रम में डॉ. हुकमचंद भारिल्ल परिवार जयपुर, पण्डित विमलचंद झांझरी परिवार उज्जैन, श्री महिपाल-धनपाल ज्ञायक परिवार बांसवाड़ा, श्री अशोक-विजय बड़जात्या परिवार इन्दौर, श्री संजय दीवान परिवार सूरत, श्रीमती निशिता-सिद्धार्थ परिवार अमेरिका, श्री प्रदीप चौधरी परिवार किशनगढ आदि सात परिवार साक्षात्कार द्वारा चयनित किये गये। शिविर के अंतिम दिन परीक्षा आयोजित हुई, जिसमें 2300 से अधिक साधर्मियों ने भाग लिया तथा सायंकाल समापन समारोह श्री अजितजी बड़ौदा की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। शिविर में 'बालक पालक की विनय कैसे करें एवं पालक बालक का पालन कैसे करें' यह शिक्षण दिया गया।

संपूर्ण शिविर में पण्डित संजयजी शास्त्री जयपुर, पण्डित संजयजी सिद्धार्थी इन्दौर, पण्डित शुभमजी शास्त्री भोपाल, पण्डित अंकितजी सरल, पण्डित सोमिलजी मोदी, चौ. आकाशजी शास्त्री खनियांधाना, श्री नीलेशजी इन्दौर, पण्डित आकाशजी शास्त्री नौगांव, पण्डित यशजी शास्त्री करेली, पण्डित संयमजी पुजारी खनियांधाना, पण्डित स्वानुभवजी शास्त्री, पण्डित अविरलजी शास्त्री, पण्डित अभिषेकजी शास्त्री, पण्डित अनिकेतजी शास्त्री खनियांधाना, पण्डित शाश्वतजी शास्त्री, पण्डित सफलजी शास्त्री, पण्डित प्रिंसजी शास्त्री, प्रज्ञा गंगवाल इन्दौर, परिधि जैन, इशिका जैन दिल्ली, निष्ठा जैन भिण्ड का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। मीडिया प्रभारी दीपकराजजी छिन्दवाड़ा व सचिनजी मोदी खनियांधाना रहे।

संपूर्ण शिविर का संयोजन नन्दीश्वर विद्यापीठ के प्राचार्य पण्डित दीपकजी शास्त्री 'ध्रुव' व पण्डित समकितजी शास्त्री खनियांधाना द्वारा किया गया।

पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा आयोजित

43वाँ आध्यात्मिक ई-शिक्षण शिविर

रविवार, दिनांक 19 जुलाई से मंगलवार 28 जुलाई, 2020 तक

शिविर में तत्त्ववेत्ता **डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल** आदि अनेक विद्वानों के प्रवचनों का लाभ मिलेगा। संपूर्ण शिविर ऑनलाइन ज़ूम एप एवं यूट्यूब के माध्यम से संचालित होगा।

सभी साधर्मीजन लाभ लेने हेतु सादर आमंत्रित हैं।

संस्थापक सम्पादक :
अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल

सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा**
एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.

सह-सम्पादक : **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**

प्रकाशक व मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com

प्रकाशन तिथि : 13 जुलाई 2020

प्रति,